

कुमर-हरन नाट किल्ल प्रमुख अंशक उद्धरण

पचार ।

वानराजा बोल—चाहि चाहि त्रिपुरारि करो नमस्कार ।
लोभार चरने सदा धार आमार ॥
एतकाल प्रभु महे न राइलो सगर ।
किंवा करि आछे मोर हाजारेक कर ॥
कोन दिना बुद्ध पाईवो ताक कहियोक ।
आछोक पुनये मोक हासै नारी लोक ॥
गुमि सम पुनय आसोक मोक धारे ।
तये हाजारेक कर सान्धल आमारै ॥

कथा—हे प्रभु सदाशिव तोहो परमे ईश्वर । सुत जैन जानि हामाक ओहि अनुग्रह
करह ।

सूत्र०—वानराजाक ऐचन बानी सुनि हरे कोपे कममान हुवा ये बोलल ।

महेश बोल—ऐये वान, तोहो हामाक आगु ऐचन मर्ण करह । येखने तोहार
भाक्तापर मऊरध्वज भागय तये मई सम पुनय सहिते बुद्ध पाववि ।
तोहि समरे हाजारेक कर छेद करव । ईहा जानि आपोनाक सत्तरे
साजु हव । हासु निधे कह्यो ।

सूत्र०—ओहि बोलि हगौरी अन्तर्धान भेल । वानराजा पुन आसने बैध रहल ।

[भङ्गमाला—डा० सत्येन्द्रनाथ शर्मा, पृष्ठ १४१]

× × × ×

सूत्र०—वानक बाहुछेद देखिये हर जाक्खल्य समान कोपे हाते विशाल धरि लेदि
आदि कृष्णक बोलल ।

२२६

बाहुन बोल—हे कृष्ण, हामार भक्त वानराजा ताहेक तोहो बाहुछेद कयलि, तोहाक
हम चारव नाहि ।

[ऐचन—पृ० १६६]

× × × ×

भटिमा

जय जय कृष्ण हर जिनयन ।
तव पद कमले पशिलो शरण ॥
किरीटि कुण्डल धर इयामल काय ।
नागशेखर चन्द्र ललाटे सुहाय ॥
कौस्तुभ कण्ठे वनमाली भारी ।
गले गरल धर त्रिपुरान्तकारी ॥
पीताम्बर धर शङ्ख-चक्रधामि ।
त्रिशूल डम्बरधर शिव महाकानी ॥
लक्ष्मी, सरस्वती वा कर सेवा ।
पार्श्वती-वल्लभ चम्पाधर देवा ॥

[ऐचन पृ० १६६]

× × × ×

प्रलय पयोधि जले वेद उद्धारि ।

× × ×

पूर्ण ब्रह्म भेला देवकी नन्दने ॥

[ऐचन पृ० १७१]

प्रत्यय—अ० ना० वि०

—[३]—

शतस्कन्ध रावण-वध

किछु प्रमुख अंशक उद्धरण

ससैन्ये सहित वीरे रामक वधिला
हनुमन्ते ऐहि वार्ता सीताक जनाइला ।
शुनि देवि कालीरूप सेतिसुणे धरि
शतस्कन्ध राक्षसक ससैन्ये संहरि ॥
रामर देखिया मृत्यु शोकाविष्टे मेल
अमृत नयने चाहि देखने जीआईला ।
ससैन्ये सहिते राम अयोध्याक आईला
लक्ष्मण सहिते निज धाने रेला ॥

[अङ्कमाला—शतस्कन्ध रावणवध, पृ० १७७]

× × ×

सीतार राक्षसे हनुमन्ते माथा पाति गोसानीक लेया चलल । कतोशने याई
सिंहल भुवने उपस्थित भेल । स्वामी देवरक मृतकप्राय देखि क्रोधे देवी भयङ्कर
मूर्ति धरल—

स्वर्गत लागिनि शिर भयङ्कर भेला
लह-लह जिभाखान आकाश भेदिना ॥

ओहि प्रकारे सीता स्वामारूप धरि शतस्कन्ध द्वारे उचगत भेल । से देवीर तेजे
सिंहल भुवन पुरि छाई भेल । देखि महाक्रोधे शतस्कन्धे ताहान पुनक चाहि बोलल ।
शतस्कन्ध बोल—ऐये पुन अर्द्धशत तोहो सीताक मारह ।

सू०—खबार बानी शुनि अर्धशते खान्ता धरि गोसानीक भावल । देखि गोसानी
ताहाक मारल । पुनः प्रभा नामे राक्षसवीरे खेदि आसल ।

प्रभा बोल—ऐये अवध छी जाति, तोहो हामाक संगे यूँ जिते चाह, आजु गदार
प्रहारे तोक यमपुर देखार्ह । हामार पराक्रम बूझ ।

सू०—ओहि बूलि प्रभा युद्ध करल । युद्धत प्रभा वीरक ससैन्ये नाश करल । ताहे
पेखि शतस्कन्ध महाक्रोधे हाते धनुर्बाण धरि युद्ध करिवाक सम्मुख भेल
देवीक चाहि बोलल ।

शतस्कन्ध बोल—ऐये दुराचारी, तोहो आजु मरिते आवलि, हामार ओहि गदा
मुद्गर प्रहारे तोहाक यमपुर पड़ाईथो । तेजे हामाक शतस्कन्ध
राजा बुलि जाननि । आजु मोर पराक्रम देख ।

गीत

एहि क्षुल्लि देला वीर गदार सन्धान
खड्गे चोटे गदाक करिला खान-खान ।
पुन महाक्रोधे राजा हानिलेक शूल
देवीर गावत धरि भेलेक निर्मूल ।
हेन देखि देवी पाछे महाक्रोधे करि
काटिला शतस्कन्धक हाते खड्ग धरि ।
शतभृङ्ग पर्वत खसिला येन मत
बोला राम-राम चेतन थावत ।

सू०—ऐखन युद्धे शतस्कन्धक माथा काटि मूमित पारल । तार भरे खलक
लागिल । राक्षस वधिये देवी दशन प्रकटि रि पारि फूरय । समस्ते जगते
घोर प्रलय मिले हेन देखि ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादि देवता देवतागल शान्त
करिवाक मने आसल, ता देखह शुनइ निरन्तरे हरि बोल हरि ।

[ऐजनि पृ० १६८—१६९]